व्याकरण के कुछ स्मरणीय बिंदु

पदबंध

क्रिया पदबंध –

बहुत देर हो गई है।

बच्चे परीक्षा दे रहे हैं।

उसने मुझे अपने घर बुलाया है।

सूर्य पूर्व दिशा से उदित होता है।

(ये वाक्य के अंत में ही होता है। इसमें किसी कार्य के होने का बोध होता है)

विशेषण पदबंध –

इस दुनिया में ईमानदार लोग बहुत कम हैं।

प्रश्न - इस दुनिया में कैसे लोग बहुत कम हैं?

उत्तर – ईमानदार

मेहनत से जी चुराने वाले सफल नहीं होते हैं।

प्रश्न – कैसे लोग सफल नहीं होते हैं?

उत्तर – मेहनत से जी चुराने वाले

सर्वनाम पदबंध –

काम करते-करते वह थक गया।

प्रश्न - काम करते-करते कौन थक गया?

उत्तर –वह

दूध में कुछ गिर गया है।

प्रश्न - दूध में क्या गिर गया है?

उत्तर – कुछ

संज्ञा पदबंध –

इज़राइल के प्रत्येक नागरिक देशभक्त हैं।

प्रश्न - कौन देशभक्त हैं?

उत्तर - इज़राइल के प्रत्येक नागरिक

आज बाज़ार मे सस्ते दामों में आम मिल रहे थे।

प्रश्न - सस्ते दामों में क्या मिल रहा था?

उत्तर – आम

क्रियाविशेषण पदबंध –

बच्चा बहुत दूर चलते-चलते थक गया।

प्रश्न - बच्चा कितना चलते-चलते थक गया?

उत्तर - बहुत दूर

दो लड़के खिड़की से बाहर देख रहे हैं।

प्रश्न - दो लड़के कहाँ देख रहे हैं?

उत्तर - खिड़की से बाहर

गाड़ी बहुत तेज़ चल रही है।

प्रश्न - गाड़ी कैसे चल रही है?

उत्तर - बहुत तेज़

राजू के बड़े भाई परसों दिल्ली चले गए।

प्रश्न - राजू के बड़े भाई कब दिल्ली चले गए?

उत्तर - राजू के बड़े भाई परसों

"ईमानदारी से काम करने वाला वह नौकर आदेश पाते ही कमरे से बाहर चला गया।"

ईमानदारी से काम करने वाला वह नौकर-संज्ञा
ईमानदारी से काम करने वाला वह – सर्वनाम
ईमानदारी से काम करने वाला – विशेषण
कमरे से बाहर – क्रियाविशेषण
चला गया- क्रिया

वाक्य रचनांतरण

सरल वाक्य – एक ही क्रिया होगी, जैसे- मैंने रोटी खाई। तुम कहाँ जा रहे हो?, राजू दौड़ रहा है।, माँ मंदिर गई हैं।
संयुक्त वाक्य - और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, अतः, फिर भी, तो, नहीं तो, किंतु, परंतु, लेकिन, पर आदि। इसमें दो या दो से अधिक उपवाक्य होते हैं और अर्थ के स्पष्टीकरण के लिए परस्पर निर्भर नहीं रहते। उदाहरण - वह सुबह गया और शाम को लौट आया।, राजू बीमार था फिर भी वह स्कूल गया।

मिश्रित/मिश्र वाक्य -'कि', 'जो', 'क्योंकि', 'जितना'; 'उतना', 'जैसा', 'वैसा', 'जब', 'तब', 'जहाँ', 'वहाँ', 'जिधर', 'उधर', 'अगर/यदि', 'तो', 'यद्यपि', 'तथापि', आदि। इसमें दो या दो से अधिक उपवाक्य होते हैं और अर्थ के स्पष्टीकरण के लिए परस्पर निर्भर रहते हैं। उदाहरण - यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे। उसने कहा कि वह अभिनेता है।, जो कल यहाँ आया था वो मेरा दोस्त था।, जितना ज़्यादा श्रम करोगे उतनी ज़्यादा सफलता मिलेगी।

सरल वाक्य को संयुक्त या मिश्र वाक्य में रूपांतरित करने को वाक्य रचनांतरण कहते हैं।

समास

1.अव्ययीभाव समास – यथा, आ, भर, प्रति, अनु, बे (उपसर्ग) (गाँव-गाँव-हर गाँव), (रातों-रात- रात ही रात में) (यथाशक्ति-शक्ति के अनुसार, आजीवन- जीवन पर्यंत, भरपेट-पेट भरकर, प्रतिदिन- हर दिन, बेखटके- बिना खटके)

2. कर्मधारय समास – विशेषण-विशेष्य (नीलकमल), उपमेय-उपमान (चंद्रमुखी) महान है जो आत्मा (महात्मा)

3. तत्पुरुष समास – को, से, के लिए, में, पर, का, के, की (Preposition) स्वर्गगत – स्वर्ग को गत, हस्तलिखित-हस्त से लिखित, गुरुदक्षिणा - गुरु के लिए दक्षिणा, ध्यानमग्न - ध्यान में मग्न, आपबीती - आप पर बीती, गंगाजल -गंगा का जल

4. द्वन्द्व समास – दो विपरीत पद (माता-पिता – माता और पिता, दिन-रात – दिन और रात, कृष्णार्जुन कृष्ण और अर्जुन)

5.द्विगु समास – द्विगु अर्थात् दो गाय, पहला पद संख्यावाचक (त्रिशूल – तीन शूलों का समूह, चौराहा, पंचवटी)

4.बहुब्रीहि समास – Only one, Mythological Character (गजानन = गज का आनन है जिसका वह (गणेश))

लेखन में ध्यान देने योग्य तथ्य

- क्योंकि, चूँकि, बल्कि, हालाँकि, ताकि, जबकि (‘क’ में ह्रस्व ‘इ’ की मात्रा का प्रयोग)
- कीजिए, लीजिए, दीजिए, लिखिए, सोचिए, बताइए (‘इए’ की ध्वनि का प्रयोग)
- करूँगा, दूँगा, लूँगा हूँ, दूँ, करूँ (‘ऊँगा’ और ‘ऊँ’ की ध्वनि का प्रयोग)
- नहीं, न ही (न ही राम आया न ही मोहन), ना ही (उसने तो ना ही कर दिया)
- है कि, हैं कि, देखा कि, सोचा कि, हूँ कि, पाया कि (क्रिया के बाद ‘कि’ का प्रयोग होता है।)
- ही, भी, दी, ली, सी, की, थी (डी, वी, टी, पी,जी अंग्रेज़ी के वर्ण) एकवर्णीय में दीर्घ ‘ई’ का प्रयोग होता है।
- महत्त्वपूर्ण, उज्ज्वल, दूसरा, समूचा, पूरा, ज़रूरी, शुरू, कारतूस, सूचना, फूल, संपूर्ण, टूट, नूह, चा-नो-यू
- याँ/यों पर अंत होने वाले शब्द से पहले ह्रस्व ‘इ’ का ही प्रयोग होगा, नदियाँ, कहानियाँ, वादियाँ
- ‘ईय’ पर अंत होने वाले शब्द राष्ट्रीय, दर्शनीय, पूजनीय, विभागीय, रमणीय, विचारणीय
- इक/इत की ध्वनि पर अंत होने वाले शब्द – धार्मिक, सैनिक, बौद्धिक, अंकित, रचित, केंद्रित
- ‘ए’ की मात्रा के बाद ‘हैं’ आता है, जैसे – वे जाते हैं, हम सुनते हैं, पिताजी आ रहे हैं।
- में -in, मैं – I, दोनों, नहीं, इन्हें, उन्हें, देंगे, करेंगे, सुनेंगे, देखेंगे, उन्होंने, जिन्होंने, जाएँगे, पाएँगे, लिखेंगे।
- सूचना, सूचित, डीएवी पब्लिक स्कूल, सधन्यवाद, भवदीय, आज्ञाकारी, विषय, महोदय
- मुश्किल, तताँरा, वमीरो, रंतिदेव, दधीचि, कर्ण, उशीनर, गौतम बुद्ध।
- रोबिनहुड, टीपू सुलतान, वजीर अली, शमसुददौला, अफगानिस्तान का सुल्तान शाहे जमा।
- महोदय, सधन्यवाद, कार्रवाई, यथाशीघ्र, उचित, आकर्षित, केन्द्रित, कृतार्थ।
- आवश्यक, सेल्यूलाइड, शैलेंद्र, हीरामन, राजकपूर, हीरबाई, वहीदा रहमान।

अपठित गद्यांश और पठित गद्यांश/पद्यांश में ध्यान देने योग्य तथ्य

- अपठित गद्यांश और पठित गद्यांश/पद्यांश में कोई भी विकल्प नहीं होगा।
- प्रश्नों को गद्यांश पढ़ने से एक बार पहले ही देख लें।
- गद्यांश पढ़ने के और प्रश्नों के उत्तर खोजने के साथ-साथ उसका आशय भी समझिए।
- प्रश्नों के सही विकल्प को चुनने और लिखने से पहले एक बार और सुनिश्चित कर लें कि विकल्प सही है।
- पठित गद्यांश या पठित पद्यांश को सही से पूरा करने के लिए पाठ्य पुस्तक के पद्य खंड और गद्य खंड का गहन अध्ययन करें। संशय की स्थिति में अपने हिन्दी शिक्षक से अवश्य चर्चा
- अपठित गद्यांश में ज़्यादा समय लग सकता है इसलिए इसके लिए जगह छोड़कर दूसरे प्रश्नों को पहले लिखें।

दिनांक - _____
सेवा में,
श्रीमान् (अधिकारी का पद)
(कार्यालय)
(शहर, जिला, राज्य)
विषय – _____ के संदर्भ में/ हेतु
महाशय
मैं _____, _____ का एक जिम्मेदार नागरिक होने की भूमिका अदा करते हुए आपका ध्यान _____ की तरफ़ आकर्षित करना चाहता हूँ।

_____
_____
_____
_____
_____
_____।

अतः, आपसे करबद्ध अनुरोध है कि _____ समस्या को दूर करने के लिए यथाशीघ्र उचित कार्रवाई कर हमें कृतार्थ करें।

सधन्यवाद!

भवदीय
(प्रेषक का नाम)
(प्रेषक का पता)

दिनांक : _____
सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
(समाचार पत्र का नाम)
(प्रकाशन शहर का नाम)
(राज्य)
विषय : _____ के संदर्भ में/ हेतु
महोदय,
मैं आपके समाचार-पत्र का एक नियमित पाठक हूँ। आपका समाचार-पत्र आज की जनता की आवाज़ बनकर लोगों की समस्याओं का हल ढूँढ़ने में अत्यंत सहायक साबित हो रहा है इसलिए मैं भी _____ गंभीर स्थिति की ओर आपके समस्त पाठकों, अधिकारियों व संबंधित विभाग का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

_____
_____
_____
_____
_____।

अतः, आपसे करबद्ध अनुरोध है कि मामले की गंभीरता को समझते हुए यथाशीघ्र एक प्रभावी लेख छापकर _____ गंभीर स्थिति की ओर आपके समस्त पाठकों, अधिकारियों व संबंधित विभाग का ध्यान केंद्रित करने की कृपा करें।
सधन्यवाद!

भवदीय
(अपना नाम)
(मोहल्ला, शहर)
(राज्य)

दिनांक - _____
सेवा में,
श्रीमान्/ श्रीमती _____ महोदय/ महोदया,
(विद्यालय का नाम)
(विद्यालय का पता)
विषय – _____ के संदर्भ में/ हेतु
महाशय/महाशया,
सविनय निवेदन यह है कि मैं (अपना नाम), (कक्षा, 'वर्ग') का एक अनुशासित छात्र/ छात्रा हूँ। _____

_____
_____
_____
_____
_____।

अतः, आपसे करबद्ध अनुरोध है कि _____ की अर्ज़ी पर विचार कर इसे अनुमोदित किया जाए। इस असीम कृपा के लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा/रहूँगी।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी छात्र/छात्रा
(छात्र/छात्रा का नाम)
(छात्र/छात्रा की कक्षा और वर्ग – Section)
(छात्र/छात्रा का क्रमांक -Roll Number)

दिनांक – 28.02.2025
सेवा में,
श्रीमान मुख्य अधिकारी
नगर पालिका
बोलानी, केंदुझर
विषय – वर्षा का जल-भराव के संदर्भ में
महाशय
मैं, शांति नगर, बोलानी का एक जिम्मेदार नागरिक होने की भूमिका अदा करते हुए आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में हो रहे जल-भराव की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारा इलाका कुछ निचले स्तर पर है, कुछ ही दूरी पर एक बड़ा–सा नाला है जो गंदगी से भरा हुआ है। वर्षा के दिनों में यह नाला पानी से लबालब भर जाता है और चारों ओर इसका गंदा पानी फैलने लगता है। इसके अलावा सड़क के गड्ढों में भी जल भराव हो जाने है जिस वजह से वर्षा के दिनों में दुर्घटना आम बात हो जाती है। ऐसी स्थिति में बीमारियाँ फैलने का खतरा भी बढ़ जाता है।
अत:, आपसे अनुरोध है कि हमारे क्षेत्र में हो रहे जल भराव की समस्या को दूर करने के लिए यथाशीघ्र उचित कार्रवाई कर हमें कृतार्थ करें।

सधन्यवाद!

भवदीय
अविनाश रंजन गुप्ता
शांति नगर, बोलानी

दिनांक : 28.02.2025
सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
बापुजी नगर,
भुवनेश्वर – 769004
विषय : पुलिस की बढ़ती लापरवाही के संदर्भ में।
महोदय,
मैं आपके समाचार-पत्र का एक नियमित पाठक हूँ। आपका समाचार-पत्र आज की जनता की आवाज़ बनकर लोगों की समस्याओं का हल ढूँढने में अत्यंत सहायक साबित हो रहा है इसलिए मैं भी अपने क्षेत्र में पुलिस की बढ़ती लापरवाही से उत्पन्न गंभीर स्थिति की ओर आपके समस्त पाठकों, अधिकारियों व संबंधित विभाग का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।
हमारे क्षेत्र में आजकल पुलिस की लापरवाही बढ़ती ही जा रही है। लोगों की शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। दिन-दहाड़े चोरी व लूट-पाट की घटनाएँ आम बात हो गई है। लोगों में भय की भावना बढ़ती जा रही है। थाने में किसी वारदात की रपट लिखाने जाने से पहले यहाँ के निवासियों को कई बार सोचना पड़ता है। अनुमान यह भी लगाया जा रहा है कि पुलिस और चोरों की साँठ-गाँठ है। देर रात को पुलिस बलों के दौरे भी अब न के बराबर हो रहे हैं। यहाँ के सभी निवासी अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगे हैं।
अत:, आपसे करबद्ध अनुरोध है कि मामले की गंभीरता को समझते हुए यथाशीघ्र एक प्रभावी लेख छापकर पुलिस की बढ़ती लापरवाही से उत्पन्न गंभीर स्थिति की ओर आपके समस्त पाठकों, अधिकारियों व संबंधित विभाग का ध्यान केंद्रित करने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

भवदीय
अविनाश रंजन गुप्ता
शांतिनगर, बोलानी
ओड़िशा

दिनांक – 28.02.2025
सेवा में,
श्रीमान् प्राचार्य महोदय
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
सेल, आर.एम.डी., बोलानी
विषय – छात्रवृत्ति के संदर्भ में
महाशय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं अविनाश रंजन गुप्ता , कक्षा-VI,'अ' का एक अनुशासित छात्र हूँ। मैं पिछले तीन वर्षों से 93% और इससे भी अधिक अंक प्राप्त करता आ रहा हूँ। इसके अतिरिक्त मैं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी उम्दा प्रदर्शन करता हूँ। पिछले सप्ताह भंज भवन में आयोजित हुए गीत-गायन प्रतियोगिता में भी मैंने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। आपके निर्देशानुसार मैंने आय प्रमाण पत्र भी विद्यालय के कार्यालय में जमा कर दिया है।
अत:, आपसे करबद्ध अनुरोध है कि मेरी छात्रवृत्ति की अर्ज़ी पर विचार कर इसे अनुमोदित किया जाए। इस असीम कृपा के लिए मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी छात्र
अविनाश रंजन गुप्ता
कक्षा - VI 'अ'
(क्रमांक - 25)

सूचना लेखन

(संस्था का नाम,शहर)

सूचना

(सूचना का मुख्य बिन्दु)

(दिनांक : 00/00/0000)

इस (संस्था) के सभी (सदस्यों/छात्रों) को सूचित किया जाता है कि ____ ।

(सूचना जारी करने वाले का नाम/हस्ताक्षर)

(सूचना जारी करने वाले का पद)

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राँची

सूचना

परेड का अभ्यास

दिनांक : 28.02.2025

इस विद्यालय के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि गणतंत्र दिवस पर होने वाली परेड के अभ्यास हेतु 22 जनवरी से लेकर 25 जनवरी तक विद्यालय के प्रांगण में प्रातः 07:30 से लेकर 08:30 तक परेड का अभ्यास करवाया जाएगा जिसमें सभी छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य है।

अविनाश रंजन गुप्ता

छात्र सचिव

टाउन हॉल, राँची

सूचना

आपदा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक : 28.02.2025

इस नगर के सभी निवासियों को सूचित किया जाता है कि स्थानीय प्रशासन की तरफ़ से दिनांक 03/09/19 - 04/09/19 तक प्रातः 09:00 से 02:00 बजे तक दो दिवसीय आपदा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन टाउन हॉल में किया जाएगा। इस कार्यक्रम से हमारे अंदर विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की तकनीक और साहस का संचार होगा।

अविनाश रंजन गुप्ता

अध्यक्ष

लघुकथा लेखन

यदि मैं समाचार-पत्र होता

लघुकथा लेखन की शब्दसीमा 100-120 के भीतर ही होनी चाहिए। लघुकथा लेखन का शीर्षक लिखते हुए इसमें नीति शिक्षा का समावेश तथा सुखद अंत होना अनिवार्य है।

अगर मैं समाचार-पत्र होता तो लोग मुझपर अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ करते। कोई मेरे खबरों से प्रसन्न होता तो कोई दुखी। कोई मुझमें नौकरी के विज्ञापन ढूँढ़ता तो कोई विवाह के। लोक सेवा के अभ्यर्थी मुझसे सामान्य ज्ञान बढ़ाते तो स्टॉक ब्रोकर टिप्स लेते। कितने काम की वस्तु हूँ मैं पर मेरा वज़ूद सिर्फ़ 24 घंटे तक ही रहता है। अगले दिन मेरा नया संस्करण आता है और मैं किसी पकौड़े वाले के यहाँ से होते हुए अंततः कूड़ेदान में पहुँच जाता हूँ। पेड़ों से पेपर बनने में लगने वाले समय से कम समय में ही मेरी मौत हो जाती है। खैर .... मेरे ई-संस्करण ने मुझे कुछ हद तक बचा रखा है।

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन लेखन के मुख्य बिंदु -

सबसे पहले विज्ञापन का शीर्षक तैयार कर लेना चाहिए।

उसके साथ ही उत्पाद से जुड़ा कोई उपशीर्षक, स्लोगन नारा या पंक्ति या टेगलाइन भी होना चाहिए।

विज्ञापन उपभोक्ता को पूर्णरूप से आश्वस्त कर सके कि विज्ञापित वस्तु उपभोक्ता के लिए हितकर है।

इसमें सरल स्पष्ट और प्रभावपूर्ण भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

विज्ञापित वस्तु कहाँ मिलेगी इसकी सम्पूर्ण जानकारी उपभोक्ता को मिलनी चाहिए।

विज्ञापन में आश्चर्य या चकित कर देने का भाव होना भी अत्यंत आवश्यक है।

विज्ञापन में रंगों का महत्त्व बहुत अधिक होता है और एक आकर्षक बार्डर भी अनिवार्य है।

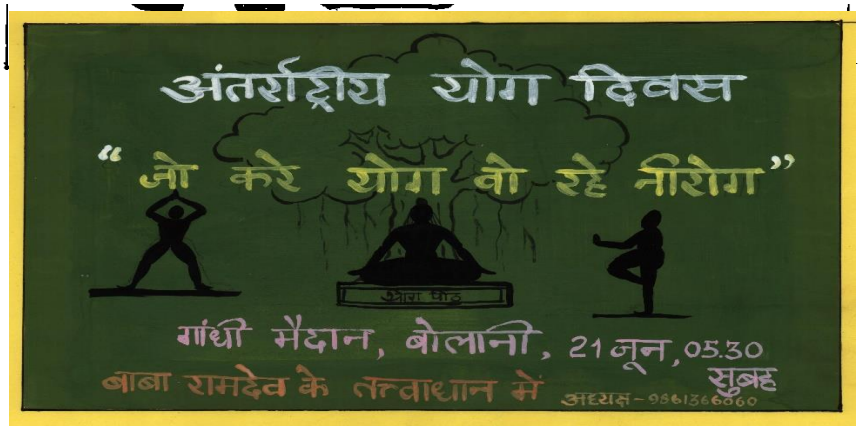

ई-मेल लेखन

आधिकारिक या औपचारिक ई-मेल का उदाहरण

आपने ई-कोमर्शियल वैबसाइट से एक माइक्रोस्कोप मँगवाया था जो खराब निकल गया और वापसी की समय सीमा भी समाप्त हो गई है। इस संदर्भ में वैबसाइट के मैनेजर को लगभग 100-120 शब्दों के अंदर एक ई-मेल लिखिए।

प्रेषिती (To)	onlineshoppinghelp@gmail.com
प्रेषक (From)	avinashgupta@gmail.com
विषय (Subject)	खरीदे गए उत्पाद के संदर्भ में

दिनांक – 28.04.20XX

महोदय/महोदया

मुझे अति दुख के साथ आपको यह सूचित करना पड़ रहा है कि मैंने आपकी प्रतिष्ठित ई-कोमर्शियल वैबसाइट www.onlineshopping.com से दिनांक 17.04.20XX को 10620/- रुपए का भुगतान करके एक माइक्रोस्कोप मँगवाया था। इस उत्पाद में 10 दिनों तक वापसी की सुविधा मौजूद थी पर ये उत्पाद प्राप्त करने के अगले दिन ही मुझे किसी आवश्यक घरेलू काम की वजह से शहर से बाहर जाना पड़ा। कुछ दिनों के बाद जब मैं वापस आया और इस उत्पाद को प्रयोग में लाने की कोशिश की तो वह खराब निकला। अब दस दिनों की वापसी का समय भी समाप्त हो गया है। ऐसे में मैं एक ग्राहक के रूप में आपसे निवेदन करता हूँ कि कृपया मेरे सामान की वापसी या मरम्मत के संदर्भ में यथासंभव मेरी मदद करें।

सधन्यवाद !

भवदीय

अविनाश रंजन गुप्ता

Send

व्यक्तिगत या अनौपचारिक ई मेल का उदाहरण

आप एक शिक्षक हैं। आपकी एक मेधावी छात्रा आभा कुमारी आईएएस बन गई है। उसे शुभकामनाएँ देते हुए लगभग 100-120 शब्दों के अंदर एक ई-मेल लिखिए।

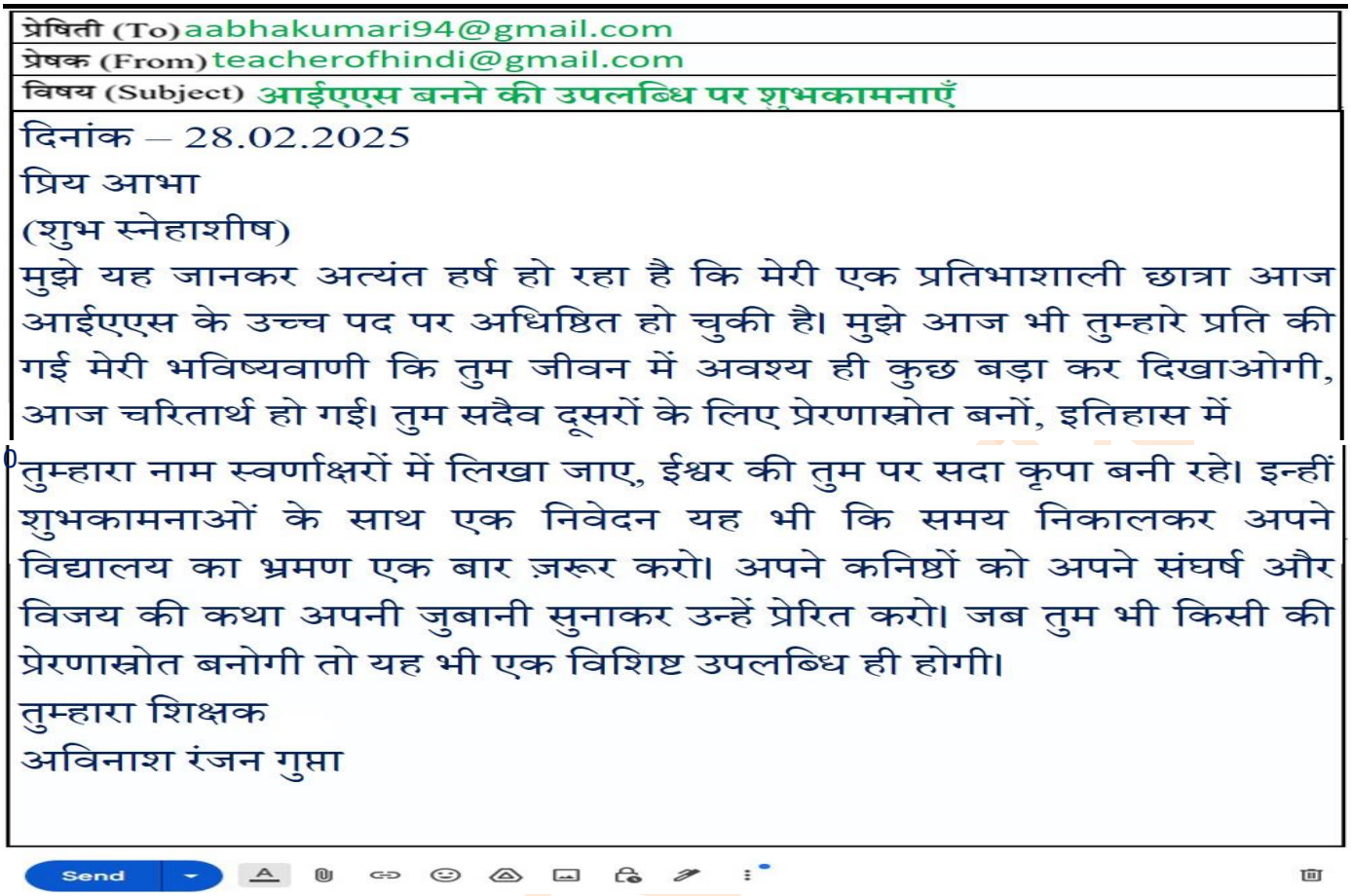

प्रेषिती (To) aabhakumari94@gmail.com
प्रेषक (From) teacherofhindi@gmail.com
विषय (Subject) आईएएस बनने की उपलब्धि पर शुभकामनाएँ

दिनांक – 28.02.2025
प्रिय आभा
(शुभ स्नेहाशीष)
मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मेरी एक प्रतिभाशाली छात्रा आज आईएएस के उच्च पद पर अधिष्ठित हो चुकी है। मुझे आज भी तुम्हारे प्रति की गई मेरी भविष्यवाणी कि तुम जीवन में अवश्य ही कुछ बड़ा कर दिखाओगी, आज चरितार्थ हो गई। तुम सदैव दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनों, इतिहास में तुम्हारा नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाए, ईश्वर की तुम पर सदा कृपा बनी रहे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ एक निवेदन यह भी कि समय निकालकर अपने विद्यालय का भ्रमण एक बार ज़रूर करो। अपने कनिष्ठों को अपने संघर्ष और विजय की कथा अपनी जुबानी सुनाकर उन्हें प्रेरित करो। जब तुम भी किसी की प्रेरणास्रोत बनोगी तो यह भी एक विशिष्ट उपलब्धि ही होगी।
तुम्हारा शिक्षक
अविनाश रंजन गुप्ता

Send

अनुच्छेद लेखन

अधिकार और कर्तव्य

* अधिकारों से जीवन की सुरक्षा, हमारा कर्तव्य- सबके अधिकारों की रक्षा, अधिकार के साथ कर्तव्य-पालन अनिवार्य **(अधिकारों से जीवन की सुरक्षा)** अधिकार वे सामाजिक दावे हैं जो व्यक्ति को उनके सर्वोत्तम स्वार्थ आदि सिद्ध करने में मदद करते हैं और उनको अपनी निजी पहचान विकसित करने में सहायता करते हैं। **(हमारा कर्तव्य- सबके अधिकारों की रक्षा)** व्यक्ति अपने अधिकारों के द्वारा ही अपनी सुरक्षा कर पाता है। ये अधिकार प्रत्येक नागरिक को समान सामाजिक स्थिति और अवसर प्रदान करते हैं तथा राज्य अथवा किसी व्यक्ति के शोषण से उसकी रक्षा करते हैं इसलिए हमें अपने अधिकारों को जानना बहुत आवश्यक है। **(अधिकार के साथ कर्तव्य-पालन अनिवार्य)** अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रत्येक अधिकार अपने साथ एक कर्तव्य निहित रखता है। यदि एक व्यक्ति को अपना स्वयं का धर्म पालन करने का अधिकार है तो दूसरे व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि उसे उसका धर्म पालन करने दे। अधिकार और कर्तव्य दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य हैं।

2. नर हो न निराश करो मन को

* आत्मविश्वास और सफलता, आशा से संघर्ष में विजय, कुछ भी असंभव नहीं, महापुरुषों की सफलता का आधार। **(आत्मविश्वास और सफलता)** मानव जीवन को संग्राम की संज्ञा से विभूषित किया है। इस जीवन संग्राम में उसे कभी सुख मिलता है तो कभी दुख। सुख मन में आशा एवं प्रसन्नता का संचार करते हैं तो दुख उसे निराशा एवं शोक

के सागर में डुबो देते हैं। इसी समय व्यक्ति के आत्मविश्वास की परीक्षा होती है। **(आशा से संघर्ष में विजय)** जो व्यक्ति इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना विश्वास नहीं खोता है और आशावादी बनकर संघर्ष करता है वही सफलता प्राप्त करता है। **(कुछ भी असंभव नहीं)** आत्मविश्वास के बिना सफलता की कामना करना दिवास्वप्न देखने के समान है। मनुष्य के मन में यदि आशावादिता नहीं है और वह निराश मन से संघर्ष करता भी है तो उसकी सफलता में संदेह बना रहता है। **(महापुरुषों की सफलता का आधार)** कहा भी गया है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। मन में जीत के प्रति हमेशा आशावादी बने रहना जीत का आधार बन जाता है। यदि मन में आशा संघर्ष करने की इच्छा और कर्मठता हो तो मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। ।

स्मार्ट क्लास की उपयोगिता।

* छात्रों की अधिक सक्रियता * विषयवस्तु का अधिगम * छात्रों पर प्रभाव।

(छात्रों की अधिक सक्रियता) स्मार्ट क्लास में पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ छात्रों द्वारा विषय को समझने एवं उसे याद करने में सहायक संपूर्ण सामग्री, जैसे कि विषय में वर्णित पशु-पक्षियों, स्थानों एवं क्रियाकलापों के चित्र आदि उपलब्ध होते हैं जिनका मल्टीमीडिया द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाता है। **(विषयवस्तु का अधिगम)** विषय की व्याख्या, शब्दार्थ, प्रश्नबैंक एवं प्रश्नों के उत्तर, उदाहरण एवं छात्रों की किसी भी शंका के समाधान हेतु विपुल निराकरण सामग्री उपलब्ध होती है जिसके कारण अध्यापक के अध्यापन एवं छात्रों द्वारा विषयाधिगम में कोई व्यवधान नहीं आता है और छात्रों के द्वारा विषयाधिगम करने में संपूर्ण सहायक सामग्री उपलब्ध होती है। **(छात्रों पर प्रभाव)** अतः, स्मार्ट क्लास में छात्रों को विषय संबंधी किसी भी जानकारी के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता। इस तरह स्मार्ट क्लास के माध्यम से उन्हें कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त हो जाती है।

पद्य खंड

साखी

साखी- कबीर के इन दोहों को साखी कहा जाता है क्योंकि 'साखी' संस्कृत का शब्द 'साक्षी' का तद्भव रूप है जिसका अर्थ होता है 'प्रत्यक्षदर्शी' या 'गवाह'।

कबीर की भाषा में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, पूर्वी हिंदी और पंजाबी के शब्दों का प्रयोग होने के कारण 'पंचमेल खिचड़ी' और लेखन शैली सधुक्कड़ी कही जाती है।

कबीर के साखियों से हमें ये ज्ञात होता है/ये सीख मिलती है -

1- सदा मीठी वाणी बोलनी चाहिए। मीठी वाणी बोलने से मन का अहंकार लुप्त हो जाता है। मीठी वाणी दूसरों को सुख देने के साथ-साथ वक्ता को भी असीम सुख प्रदान करती है।

2- ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं। जो ईश्वर की खोज में यहाँ-वहाँ भटकता है वह उस कस्तूरी मृग के समान होता है जो अपने ही नाभि से निकलने वाले सुगंध की खोज पूरे जंगल में करती है।

3- मनुष्य के अंदर जब तक अहंकार का निवास होता है तब तक ईश्वर से उसका संगम असंभव होता है। परंतु जैसे ही मनुष्य अहंकारमुक्त होता है उसे ईश्वरप्राप्ति हो जाती है।

4- जो भौतिक (Materialistic) सुख को ही सच्चा सुख मानते हैं वे मूर्ख हैं क्योंकि मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है।

5- रामभक्त को राम से अलग कर देने पर विरह रूपी साँप के काटने पर उसकी मृत्यु निश्चित है अगर किसी कारणवश मृत्यु न भी हो तो राम वियोगी पागल ज़रूर हो जाता है।

6- हमें निंदा करने वाले व्यक्तियों से अपनी कमियों के बारे में पता चलता है। हमें उनके लिए अपने ही आँगन में एक कुटिया बना देनी चाहिए। ऐसा करने से हमारा स्वभाव बिना साबुन और पानी के ही निर्मल हो जाएगा।

7- जिन्होंने अनेक मोटे-मोटे ग्रंथ पढ़ डाले और मृत्यु को प्राप्त हुए मगर असल में पंडित नहीं बन पाए। पंडित बनने के लिए 'प्रेम' रूपी एक अक्षर ही काफी है।

8- हमें ज्ञान रूपी मशाल से ईर्ष्या, लालच, क्रोध को भस्म कर देना चाहिए और दूसरों की भी मदद करनी चाहिए।

मीरा के पद

संत रैदास की शिष्या मीरा के पदों में राजस्थानी, ब्रज, गुजराती, पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी के प्रयोग भी मिल जाते हैं। श्रीकृष्ण की अनन्य भक्तिन अपने आराध्य से निवेदन करती हैं कि –

1- द्रौपदी की चीर बढ़ाकर उसकी लाज रखी थी। भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए आपने नरहरि का रूप भी धारण कर लिया था। आपने मगरमच्छ से हाथी की रक्षा की थी। सब की रक्षा और मदद करने वाले प्रभु मेरी भी पीड़ा दूर करो।

2- मीरा श्रीकृष्ण से निवेदन करती हैं कि वे उन्हें अपनी सेविका बना लें। सेविका बनने पर वह बाग लगाएगी और वृन्दावन की कुंज गलियों में गोविंद का लीलागायन करेंगी। श्रीकृष्ण की सेवा में मीरा को आठों पहर प्रभु के दर्शन, स्मरण व भक्ति का लाभ होगा। इसी को मीरा वेतन स्वरूप स्वीकार करेगी।

3- मेरे प्रभु पीले वस्त्र धारण कर माथे पर मोर का पंख मुकुट की भाँति सजाते हैं तथा गले में पाँच प्रकार के फूलों से वैजंती माला सदा शोभा बढ़ाती है। अपनी मुरली से मधुर तान निकालकर सबको अपने वश में करनेवाले गोपाल वृंदावन में गायों को चराते हैं।

मनुष्यता

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा विरचित कविता **'मनुष्यता'** मानवता पर आधारित है। इनकी इस कविता से हमें यह सीख मिलती है कि –

- दूसरों के हित के लिए मरना ही सुमृत्यु कहलाता है।
- परमदानी राजा **रंतिदेव** ने स्वयं क्षुधा से व्याकुल होने पर भी अपना भोजन से भरा थाल दान कर दिया था। महर्षि **दधीचि** ने वृत्रासुर से देवों की रक्षा करने हेतु अपनी अस्थियों का दान किया था। राजा **उशीनर** ने शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए अपना मांस तक दान कर दिया था। दानवीर **कर्ण** ने तो अत्यंत प्रसन्नता से अपना कवच-कुंडल तक दे दिया था। **गौतम बुद्ध** के दया प्रवाह में विरोधी वर्ग भी विनीत बन उनके सामने झुक गया।
- इस दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति हमारा मित्र है और हमें एक दूसरे का सहारा बनकर ही जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।
- मनुष्य को सदा विवेकशील व्यवहार करना चाहिए। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन व जगत में सदा एक-दूसरे के काम आना चाहिए। यदि भाई ही भाई की पीड़ा दूर नहीं करेगा तो इससे बुरा कुछ अन्य नहीं हो सकता। प्रत्येक मनुष्य को एक-दूसरे के काम आना चाहिए। मनुष्य कहलाने का अधिकारी वही है जो मनुष्य के काम आता है तथा मानवता की राह पर चलकर जीवनयापन करता है।
- हमें जीवन में इच्छित व उचित मार्ग पर प्रसन्नता से कर्मरत होते हुए आगे बढ़ना चाहिए। राह में जो भी विघ्न या बाधाएँ आएँ उन्हें अपने साहस व धैर्य से दूर कर देना चाहिए। आपस में भेद-भाव की भावना कभी भी नहीं पनपनी चाहिए तथा सबको मिलजुल कर रहना चाहिए। जीवन की राह पर बिना भेद-भाव, तर्क-वितर्क, ईर्ष्या-द्वेष के एक साथ आगे बढ़ना चाहिए।

पर्वत प्रदेश में पावस

प्रकृति के सुकुमार कवि **सुमित्रानंदन पंत** अपनी कविता '**पर्वत प्रदेश में पावस**' पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु के मनमोहक दृश्य को लयबद्ध तरीके से पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं और साथ ही साथ हमें भी पर्वतीय प्रदेश में वर्षा के मौसम में जाने का मौन निमंत्रण दे रहे हैं। पावस ऋतु में पर्वतीय प्रदेश की सुंदरता कुछ इस प्रकार की होती है –

- करघनी के आकार की ढाल वाले पर्वतों की शृंखला दूर तक फैली हुई है। पर्वतों पर अनगिनत फूल सुशोभित होते हैं, ऐसा लगता है मानो पर्वत अपनी पुष्प रूपी आँखों से तालाब में हैरानी से अपनी विशालता को देख रहा है। पर्वतों के चरणों में तालाब (**ताल**) दर्पण-सा फैला हुआ है तथा पर्वतों का महाकार उसके जल में प्रतिबिम्बित हो रहा है।
- पहाड़ों से झरते हुए झरने मधुर स्वर उत्पन्न करते हैं। लगता है ये झरने पर्वतों की विशालता और महानता का यशोगान कर रहे हैं। इनसे निकलता हुआ मधुर स्वर तथा इनकी अनुपम छटा तन-मन में अभूतपूर्व जोश, उमंग व उल्लास का संचार कर देती है। झरनों से गिरती जल की बूँदें मोती की लड़ियों-सी दिखाई पड़ती हैं तथा झरनों का जल सुंदर सफ़ेद फेन बनाता है। पर्वतों पर बड़े-बड़े वृक्ष सुशोभित हैं। लगता है, मानो ये पर्वतों को ऊपर उठाने की कामनाएँ हैं। ये वृक्ष शांत आकाश की ओर एकटक देखते हुए अत्यंत चिंतातुर से प्रतीत होते हैं।
- पर्वतीय प्रदेश में पलभर में बादलों के आने से समस्त दृश्य अदृश्य हो जाता है तो कवि कह उठते हैं कि लगता है कि बादलों के पंख लगाकर पलभर में ही पहाड़ वहाँ से उड़कर कहीं चले गए हैं। अब कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा है। मात्र झरने की मधुर आवाज़ उस निस्तब्ध वातावरण की मनोरमता में वृद्धि कर रही है। अचानक लगता है, मानो आकाश ही धरती पर टूट पड़ा है। तथा भयवश शाल के वृक्ष धरती की गोद में समा गए हों या मानो वह तालाब ही जल गया है और उसी का धुआँ बादल की तरह चारों दिशाओं में व्याप्त है। तभी अचानक बादल छँट जाते हैं। सूर्य के प्रकट होने से आकाश में बड़ा-सा इंद्रधनुष दिखाई देता है, मानो इंद्र बादल रूपी विमान में घूम-घूम कर अपनी जादूगरी की माया का प्रदर्शन कर रहे हों।

कर चले हम फिदा

प्रस्तुत पाठ जो भारत-चीन युद्ध (1962) की पृष्ठभूमि पर बनी फ़िल्म 'हकीकत' के लिए **कैफ़ी आज़मी** द्वारा लिखा गया गीत था, यह ऐसे ही सैनिकों के हृदय की आवाज़ बयान करता है, जिन्हें अपने किए-धरे पर नाज़ है। इसी के साथ इन्हें अपने देशवासियों से कुछ अपेक्षाएँ भी हैं। चूँकि जिनसे उन्हें वे अपेक्षाएँ हैं वे देशवासी और कोई नहीं, हम और आप ही हैं, इसलिए आइए, इसे पढ़कर अपने आप से पूछें कि हम उनकी अपेक्षाएँ पूरी कर रहे हैं या नहीं?

- इस गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। यह युद्ध हिमालय की वादियों में लड़ा गया था। इस युद्ध में हज़ारों सैनिकों ने वीरगति प्राप्त की थी।

- परमवीर भारतीय सैनिकों के ठंड के कारण नब्ज़ जम रही थी और छाती पर गोलियाँ खाने के कारण साँसें थम रही थीं फिर भी ये दुश्मनों की ओर बढ़ते ही गए, इनके सर कट गए तो भी कोई गम नहीं इन्होंने किसी भी कीमत पर हिमालय का सिर नीचे नहीं होने दिया।

- वीर सैनिकों का यह कहना है कि ज़िंदा रहने के तो बहुत से कारण हो सकते हैं पर मरने की वजह बहुत कम होती है। इनके हिसाब से वो जवानी, जवानी ही नहीं जिसने अपनी धरती माता के हुस्न अर्थात् सुंदरता और इश्क अर्थात् प्रेम के लिए अपना लहू न बहाया हो।

- वीरगति प्राप्त कर रहे सैनिकों की यह इच्छा है कि हमारे बाद भी देश पर मर मिटने वाले देशभक्तों का कारवाँ आगे आता रहे। वे यह भी कह रहे हैं कि यह युद्ध भी एक जश्न है और इसके बाद हमें जीत का जश्न मनाना है। हमने तो अपने सिर पर कफ़न बाँध लिया है।

- पौराणिक प्रतीकों का अनुपम प्रयोग करते हुए यहाँ भारत के वीर सैनिकों को राम और लक्ष्मण कहा गया है और भारत माता की पुण्य भूमि को सीता तथा दुश्मनों को रावण कहा गया है।
- "अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो" की आवृत्ति सैनिकों की इच्छा और हमें हमारे देश के प्रति ज़िम्मेदारियों का बोध कराती है।

तोप

इस कविता के कवि **वीरेन डंगवाल** कहते हैं कि ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में व्यापार करने के इरादे से आई थी। लेकिन व्यापार करते-करते वह हमारी शासक बन बैठी। उसने कुछ बाग बनवाए तो कुछ तोपें भी तैयार कीं। उन तोपों ने इस देश को फिर से आज़ाद कराने का सपना साकार करने निकले जाँबाज़ों को मौत के घाट उतारा। पर एक दिन ऐसा भी आया जब हमारे पूर्वजों ने उस सत्ता को उखाड़ फेंका और तोप को निस्तेज कर दिया।

इस कविता में –

कानपुर में कंपनी बाग के मुहाने पर धर रखी गई है की तोप। यह तोप हमें 1857विरासत में मिली है इसलिए इसकी बड़ी संभाल होती है और साल में दो बार अगस्त के दिन इसे चमकाया जाता 15 जनवरी और 26है। हर दिन सुबहशाम उस - बाग में बहुत से सैलानी आते हैं जिसे यह तोप मूक भाषा में कहती है कि मैं एक समय बड़ी जबरदस्त थी। मैंने न जाने कितने स्वतंत्रता सैनानियों के धज्जे उड़ा दिए थे। परंतु अब मैं निस्तेज सजावट की वस्तु की तरह यहाँ पड़ी हूँ। बच्चे मुझपर घुड़सवारी का आनंद लेते हैं और उनसे खाली होने पर चिड़िया मुझपर बैठकर गपशप करती है और शैतानी में कभी कभी- खास कर गौरैयें मेरे भीतर घुस जाते हैं। वास्तव में तोप की स्थिति से यही भान होता है कि तोप चाहे जितनी बड़ी और जबरदस्त क्यों न हो एक न एक दिन उसका मुँह बंद हो ही जाता है।

आत्मत्राण

रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रस्तुत कविता का बंगला से हिंदी में अनुवाद श्रद्धेय **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** जी ने किया है। इस कविता का शीर्षक 'आत्मत्राण' अर्थात् 'खुद की रक्षा' अन्य प्रार्थना गीतों से अलग है क्योंकि कवि ईश्वर अर्थात् करुणामय से निम्नलिखित कामना करते हैं -

- प्रबल शक्ति – ताकि हर प्रकार की मुसीबतों से ये स्वयं लड़ सके।
- पर्वतरूपी पुरुषार्थ – कवि ऐसे व्यक्तित्व की कामना करते हैं जो पर्वत की तरह विशाल और अचल हो। ऐसे में वे किसी भी विपदा से विचलित नहीं होंगे।
- रोगमुक्त शरीर – जीवन का आनंद लेने की बात हो या समस्याओं से जूझना हो रोगमुक्त शरीर अत्यंत आवश्यक है।
- सर्वदा ईश्वर स्मरण का भाव – दुख के दिनों में हम ईश्वर का स्मरण करते हैं पर सुख के दिनों में ईश्वर को भूल जाते हैं। इसलिए कवि यह चाहते हैं कि ईश्वर उनमें ऐसा भाव भर दें कि दोनों स्थितियों में समान रूप से ईश्वर का स्मरण करते रहें।
- ईश्वर पर अखंड विश्वास - अगर कवि की बहुत क्षति हो रही हो और सारी दुनिया उनके खिलाफ़ हो जाए ऐसी स्थिति में भी उनका ईश्वर पर से विश्वास डगमगाने न पाए।

गद्य खंड

बड़े भाई साहब

मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित **बड़े भाई साहब** वर्तमान शिक्षा नीति पर व्यंग्य करती है-

- शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है - बुद्धि का विकास।

- हेनरी, जेम्स, विलियम, चार्ल्स आदि के इतिहास पढ़ना, 'समय की पाबंदी' पर चार पन्नों का निबंध, जामेट्री के नियम इन सब पर व्यंग्य।
- बड़े भाई साहब दो बार फेल हो जाते हैं और छोटा भाई दो बार अपनी कक्षा में अव्वल आ जाता है।
- दोनों भाइयों में पाँच साल का अंतर है।
- एक आदर्श के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित करने की खातिर बड़े भाई साहब ने अपनी बाल-सुलभ प्रवृत्तियों का दमन कर दिया।
- पाठ में शिक्षा की प्रचलित रटंत पद्धति की पूर्ण आलोचना।
- बड़े भाई साहब ज़िंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण बताया है। उनका मानना था कि किसी के पास किताबी ज्ञान कितना ही हो लेकिन उम्र के साथ जो अनुभव आता है वही जीवन में सही-गलत का फ़ैसला लेने में अधिक मदद करता है। उनका मानना था की बुजुर्गों ने चाहे डिग्री प्राप्त न की हो लेकिन अपने अनुभव के आधार पर उन्हें जीवन के उचित और अनुचित का सही ज्ञान होता है। स्कूल के हेडमास्टर ने ऑक्सफोर्ड से एम. ए. किया था परंतु घर चलाने में फ़ेल हो गए। उनका घर उनकी बूढ़ी माँ सफलता और कुशलता से चलाती हैं जो अनुभव का परिचायक है।

डायरी का एक पन्ना

सीताराम सेकसरिया द्वारा लिखित **डायरी का एक पन्ना** कलकत्ता में सन् 1931 की स्वतंत्रता आंदोलन का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है-समय 26 जनवरी, 1931, स्थान- कलकत्ता, पात्र परिचय और घटनाक्रम,

अविनाश बाबू - बंगाल प्रांतीय विघार्थी संघ के मंत्री।

हरिश्चंद्र सिंह - कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री

सुभाष बाबू – आंदोलन के मुख्य

पूर्णोदास - सुभाष बाबू के जुलूस का भार इन पर था।

पुरुषोत्तम राय – एक कार्यकर्ता

ज्योतिर्मय गांगुली - एक कार्यकर्ता

क्षितीश चटर्जी - एक कार्यकर्ता

वृजलाल गोयनका - एक कार्यकर्ता जो लेखन सीताराम सेकसरिया के साथ दमदम जेल में थे।

डॉक्टर दासगुप्ता – ज़ख़्मियों का इलाज करने के साथ-साथ उनकी फ़ोटो उतरवा रहे थे।

महिला कार्यकर्ता

गुजराती सेविका संघ की महिलाएँ जिन्होंने इस आंदोलन में भाग लिया।, मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने भी इस आंदोलन में भाग लिया।, मदालसा बजाज – महिला कार्यकर्ता, जानकी देवी - महिला कार्यकर्ता, विमल प्रतिभा - महिला कार्यकर्ता

- अत्यधिक खुशी एवं उल्लास का दिन। अंग्रेज़ी शासन की सख्ती के बावजूद स्वतंत्रता दिवस का ऐलान।
- मकानों पर सजावट और राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहे थे। मोनुमेंट, पार्कों तथा मैदानों में पुलिस-ही-पुलिस तैनात।
- अविनाश बाबू जब झंडा गाड़ रहे थे तब पुलिस ने उन्हें पकड़ा। युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने तारा सुंदरी पार्क में नहीं जा सके। भयंकर मारपीट, कई घायल।
- 11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों का झंडोत्सव संपन्न। सुभाष चंद्र बोस के जुलूस का भार पूर्णोदास पर। स्त्री समाज का जुलूस भी निकलने को तैयार। पुलिस कमिश्नर के नोटिस के जवाब में कौंसिल का नोटिस। खुला चैलेंज और ओपन लड़ाई।
- ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू का जुलूस। पुलिस जुलूस को रोकने में असफल। भयंकर लाठीचार्ज, अनेक घायल, सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ीं। फिर भी उन्होंने कहा कि आगे बढ़ना है। क्षितीश चटर्जी का सिर फटा।

- स्त्रियों ने मोनुमेंट पर चढ़ कर झंडा फहराया और घोषणा पढ़ी। सुभाष बाबू को पकड़ कर लाल बाज़ार लॉकअप में भेजा गया। स्त्रियों के जुलूस का नेतृत्व कर रही विमल प्रतिभा को बहू बाज़ार मोड़ पर रोका।
- वृजलाल गोयनका झंडा लेकर दौड़ा परंतु गिर गया। एक घुड़सवार ने उसे लाठी मारी। वह स्त्रियों के जूलूस में शामिल। लाल बाजार में गिरफ्तार।
- इस प्रकार कई लोग घायल तथा कई गिरफ्तार, परंतु अभूतपूर्व खुशी तथा उल्लास में कोई कमी नहीं।

तताँरा-वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई का यह पाठ हमें यह शिक्षा देती है कि प्रेम सबको जोड़ता है और घृणा दूरी बढ़ाती है। जो समाज के लिए अपने प्रेम तथा अपने जीवन का बलिदान दे देता है, उसे समाज न केवल याद रखता है बल्कि उसके बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देता। इसीलिए तत्कालीन समाज के मारक उदाहरण प्रस्तुत करने वाले इस युगल के त्यागमयी बलिदान को आज भी उस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा के साथ याद करते हैं।

तताँरा की चारित्रिक विशेषताएँ (त्याग और बलिदान का प्रतीक)

- पासा गाँव का सुंदर एवं शक्तिशाली युवक जिसके कमर से सदैव लकड़ी की तलवार लटकी रहती थी।
- स्वभाव से नेक, आत्मीयतापूर्ण तथा दूसरों की सहायता करने वाला।
- एक दिन समुद्र तट पर सायंकाल वामीरो से मुलाकात। तत्पश्चात वामीरो से प्रेम।
- मुलाकातें होती रहीं तथा अफवाहें फैलती रहीं।
- परंपरा पर क्षोभ तथा अपनी बेबसी पर खीझ।
- अंततः प्रेम-पथ पर जीवन का त्याग।

वामीरो की चारित्रिक विशेषताएँ

- लपाती गाँव की सुंदर युवती।
- सुरीला कंठ तथा गीत-संगीत का जादू बिखेरने की कला में माहिर।
- वामीरो का आकर्षण भी तताँरा की तरफ़, मौन अभिव्यक्ति और मूक समर्पण।
- वामीरो की माँ का विरोध तथा तताँरा को अपमानित करना।
- तताँरा की मृत्यु के बाद वामीरो विक्षिप्त।
- प्रेम-पथ पर संपूर्ण जीवन समर्पित।

रूढ़ियाँ और बंधन एक सीमा तक समाज को मर्यादा में रखने के लिए होते हैं। यदि इन्हीं मर्यादाओं के कारण मानव भावनाएँ आहत होने लगे तो उन मर्यादाओं की सीमा पर पुनः विचार की आवश्यकता होती है। तताँरा और वामीरों दोनों अलग-अलग गाँव के थे। लेकिन जब उसी तताँरा को दूसरे गाँव की लड़की से प्रेम हो गया तो सब उसका विरोध करने लगे। गाँव वालों की ज़िद के कारण ही तताँरा और वामीरो को अपने प्राण गँवाने पड़े। इस प्रकार रूढ़ियाँ जो समाज का कुछ भला नहीं कर रही अपितु नुकसान कर रही हैं तो उन रूढ़ियों का टूट जाना ही समाज के लिए बेहतर है।

तीसरी कसम के शिल्पकार - शैलेंद्र

1. पाठ ‘ तीसरी कसम’ के लेखक प्रहलाद अग्रवाल हैं।
2. इस फ़िल्म के निर्माता गीतकार शैलेंद्र हैं।
3. ‘तीसरी कसम’ शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फ़िल्म है।
4. यह फ़िल्म भले ही बॉक्स-ऑफिस पर ज़्यादा व्यापार न कर पाई हो परंतु आत्मीयता और निर्मल प्रेम का ऐसा अनूठा छायांकन दुर्लभ ही है।

5. 'तीसरी कसम' को 'राष्ट्रपति स्वर्णपदक' मिला, बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म और कई अन्य पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किया गया। मास्को फ़िल्म फेस्टिवल में भी यह फ़िल्म पुरस्कृत हुई।
6. 'तीसरी कसम' फ़िल्म नहीं, सैल्यूलाइड पर लिखी कविता थी क्योंकि इसमें भावों की प्रधानता थी और इसमें मानवीय संवेदनाओं को कहीं भी चोटिल नहीं किया गया है।
7. राजकपूर ने गाड़ीवान 'हीरामन' और छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी वहीदा रहमान ने नौटंकी में अभिनय करने वाली 'हीराबाई' की भूमिका निभाई थी।
8. एशिया के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने इस फ़िल्म में आँखों की भाषा में बात करके अपने आप को अमर बना लिया है। यह फ़िल्म इनके जीवन की सबसे हसीन फ़िल्म है और इसके लिए इन्होंने सिर्फ़ 1 रुपया ही लिया था।
9. फ़िल्म 'तीसरी कसम' में राजकपूर ने गाड़ीवान 'हीरामन' की भूमिका में तीन कसम ली थी। पहली यह कि वह कभी चोरबाज़ारी का समान नहीं लादेगा, दूसरा यह कि वह अपनी गाड़ी में बाँस नहीं लादेगा और फ़िल्म के अंत में वह तीसरी कसम यह लेता है कि वह अब कभी किसी नौटंकी वाली को अपनी गाड़ी में नहीं बैठाएगा।
10. हीराबाई की फेनू-गिलासी (ग्रामोफ़ोन) जैसी मीठी बोली पर रीझना और अपनी मासूमियत से दर्शकों के दिल में उतर जाने का काम केवल राजकपूर ही कर सकते हैं।

अब कहाँ दूसरों के दुख से दुखी होने वाले

निदा फ़ाज़ली का यह मानना है कि कुदरत ने यह धरती उन तमाम जीवधारियों के लिए अता फरमाई थी जिन्हें खुद उसी ने जन्म दिया था। लेकिन हुआ यह कि आदमी नाम के कुदरत के सबसे अज़ीम करिश्मे ने धीरे-धीरे पूरी धरती को ही अपनी जागीर बना लिया और अन्य तमाम जीवधारियों को दरबदर कर दिया।

- सुलेमान ने चींटियों से कहा, "घबराओ नहीं, सुलेमान को खुदा ने सबका रखवाला बनाया है।"
- सिंधी भाषा के महाकवि शेख अयाज़ के पिता कुएँ से नहाकर लौटे। माँ ने भोजन परोसा। उन्होंने जैसे ही रोटी का कौर तोड़ा। उनकी नज़र अपनी बाजू पर पड़ी। वहाँ एक काला च्योंटा रेंग रहा था। उस बेघर च्योंटा को कुएँ के पास उसके घर छोड़ने गए।
- नूह के सामने से एक बार एक घायल कुत्ता गुज़रा। नूह ने उसे दुत्कारते हुए कहा, 'दूर हो जा गंदे कुत्ते!' कुत्ते ने उनकी दुत्कार सुनकर जवाब दिया... 'न मैं अपनी मर्ज़ी से कुत्ता हूँ, न तुम अपनी पसंद से इनसान हो। बनाने वाला सबका तो वही एक है।' नूह यह सुन दुखी हो मुद्दत तक रोते रहे।
- समुद्र ने अपना गुस्सा दिखाते हुए तीन जहाज़ों को तीन दिशाओं में फेंक दिया एक वर्ली के समंदर के किनारे पर आकर गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने औंधे मुँह और तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया के पास।
- लेखक की माँ कहती थी, सूरज ढले आँगन के पेड़ों से पत्ते मत तोड़ो, पेड़ रोएँगे। दीया-बत्ती के वक्त फूलों को मत तोड़ो, फूल बद्दुआ देते हैं।... दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो, वह खुश होता है। कबूतरों को मत सताया करो, वे हज़रत मुहम्मद को अज़ीज़ हैं। उन्होंने उन्हें अपनी मज़ार के नीले गुंबद पर घोंसले बनाने की इज़ाज़त दे रखी है। मुर्गे को परेशान नहीं किया करो, वह मुल्ला जी से पहले मोहल्ले में अज़ान देकर सबको सवेरे जगाता है।
- लेखक की माँ जब एक बार बिल्ली से अंडे को बचाने का प्रयास कर रही थी और गलती से वह अंडा उनसे टूट गया तो इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिर्फ़ रोती रही और बार-बार नमाज पढ़-पढ़कर खुदा से इस गलती को मुआफ़ करने की दुआ माँगती रही।
- लेखक पहले ग्वालियर में रहते थे और बाद में मुंबई के वर्सोवा में जहाँ पहले दूर तक जंगल था। पेड़ थे, परिंदे थे और दूसरे जानवर थे। अब यहाँ समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है।

- वर्सोवा में जहाँ लेखक का फ्लैट है वहाँ कबूतरों ने अपना आशियाना बना लिया था जिस वजह से उनकी पत्नी काफी परेशान थीं और उन्होंने कबूतरों के आने-जाने वाले स्थान में जाली लगवा दी। अब कबूतर उदास हैं।

पतझर में टूटी पत्तियाँ: 1. गिन्नी का सोना, 2. झेन की देन

रवीन्द्र केलेकर का ये विचारात्मक लेख के मुख्य बिन्दु कुछ इस प्रकार हैं-

- जिस प्रकार सोना कीमती और कम मात्रा में उपलब्ध होता है वैसे ही आदर्शवादी लोग समाज के लिए कीमती और दुनिया में कम होते हैं। ये समाज को शाश्वत मूल्य प्रदान करते हैं।
- व्यवहारवादी लोग तांबे की तरह होते हैं जो कम कीमती और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं और ऐसे लोग लाभ हानि का अनुमान लगाकर ही काम करते हैं। ये समाज को कुछ शाश्वत जैसा कभी नहीं दे पाते।
- गांधीजी को प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट कहा गया है क्योंकि वे व्यावहारिकता को आदर्शवादिता तक लेकर जाते थे।

'झेन की देन' से यह ज्ञात होता है कि प्रतिस्पर्धा ने लोगों का सुख-चैन तथा मन की शांति छीन ली है।

- जापान के अस्सी प्रतिशत लोग मानसिक बीमारी से ग्रस्त हैं। इसका कारण अमेरिका से प्रतिस्पर्धा है।
- जापान में चाय पीने की एक विधि है उसे चा-नो-यू कहते हैं। (टी-सेरेमनी)
- चाय पिलाने वाले को चाजीन कहते हैं और वह दो-झो कहकर अतिथियों का स्वागत करता है।
- वहाँ केवल तीन लोगों को ही प्रवेश दिया जाता है क्योंकि शांति मुख्य बात होती है।
- दो घूँट की चाय को डेढ़ घंटे तक चुसकियाँ लेकर पीते-पीते लेखक के दिमाग से भूत और भविष्य दोनों ही गायब हो गए और वर्तमानकाल अनंतकाल जितना विस्तृत लगने लगा।
- वास्तव में **मनुष्य को मशीन** बनने से रोकना ही इस लेख का मूल उद्देश्य है।

कारतूस

हबीब तनवीर के इस पाठ में एक ऐसे जाँबाज़ के कारनामों का वर्णन है जिसका एकमात्र लक्ष्य था, "अंग्रेज़ों को इस देश से बाहर करना"-

- इस नाटक का मुख्य किरदार अवध का नवाब वज़ीर अली है जो आसिफ़उद्दौला का बेटा और सआदत अली का भतीजा है।
- अंग्रेज सआदत अली से मिलकर वज़ीर अली को तीन लाख रुपए सालाना वज़ीफ़ा मुकर्रर करके बनारस भेज देते हैं। बदले में सआदत अली ने अंग्रेजों को दस लाख रुपए नकद और आधी जायदाद दे दी।
- कर्नल और लेफ्टिनेंट को वज़ीर अली के बारे में जानकर रॉबिनहुड के कारनामे याद आ जाते हैं।
- अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे ज़मा को हिंदुस्तान पर हमला करने की दावत टीपू सुल्तान, वज़ीर अली और बंगाल के नवाब का निस्बती (रिश्ते) भाई शमसुद्दौला ने दी थी।
- वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही है और उसमें कई चारित्रिक विशेषताएँ भी हैं –
  कुशल प्रशासक – पाँच महीने की हुकूमत में अपने दरबार को अंग्रेज़ी प्रभाव से मुक्त कर देना।
  स्वाभिमानी – कंपनी के वकील के अभद्र व्यवहार पर खंजर से उसका कत्ल कर देना।
  बुद्धिमान - अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे ज़मा को हिंदुस्तान पर हमला करने की दावत देना।
  दूरदर्शी – नेपाल पहुँचकर अपनी सैन्य-शक्ति बढ़ाने के लिए चेष्टित रहना।

जाँबाज़ – गोरखपुर के जंगल में लगे उसी खेमे में पहुँचकर वहाँ के कर्नल से दस कारतूस ले आना जो खेमा उसे ही पकड़ने के लिए लगाया गया था।

- इस पाठ का मूल उद्देश्य है -
  भारत के इतिहास के जाँबाजों से आज के छात्रों को परिचित कराना।
  मनुष्य के व्यक्तित्व को वज़ीर अली जैसा निडर और ज़िंदादिल बनाने की प्रेरणा देना।
  शोषण, अत्याचार और घृणा करने वालों के मन में खौफ़ पैदा करना।

संचयन

हरिहर काका

इस पाठ में आस्था के प्रतीक धर्म-स्थानों और धर्म-ध्वजा धारकों (अर्थात् धर्म के ठेकेदारों) की स्वार्थी प्रवृत्तियों को उजागर किया गया है। यह कहानी पारिवारिक संबंधों में भ्रातृभाव को कुचलती, बेदखल करती हुई तथा पाँव पसारती जा रही स्वार्थ लोलुपता तथा धर्म की आड़ में फलने-फुलने वाले कुकर्म तथा हिंसावृत्ति जैसे यथार्थ सत्य को अनावृत करती है।

- मिथिलेश्वर इस पाठ के लेखक हैं और इनका हरिहर काका के साथ बड़ा ही घनिष्ठ संबंध है। लेखक का हरिहर काका से आत्मीयता के कारण उनकी दयनीय मनःस्थिति देखकर लेखक द्रवित हो जाते हैं।
- संपूर्ण पाठ हरिहर काका पर केंद्रित है। हरिहर काका 15 बीघे ज़मीन के मालिक, इसके बावजूद अभावपूर्ण जीवन जीने पर मज़बूर हैं।
- ग्रामवासी अफवाहों को हवा देने वाले हैं और उनकी हरिहर काका से वास्तविक हमदर्दी नहीं है।
- हरिहर काका के तीन भाई – स्वार्थी एवं लालची प्रवृत्ति के हैं। हरिहर काका की जमीन की तरफ गिद्ध दृष्टि लगाए हुए हैं।
- ठाकुरबारी के महंत - धर्म के ठेकेदार, धर्म के नाम पर कलंक, धनलोलुप एवं अवसरवादी हैं। हरिहर काका की ज़मीन हथियाने की भरपूर कोशिश, के साथ छल - बल का प्रयोग (अपहरण करना) करते हैं।
- नेता जी-राजनीति की जादुई छड़ी उनके पास है, ये अवसरवादी एवं चापलूस हैं। बहती गंगा में हाथ धोने में ये माहिर हैं।
- वास्तव में यह कहानी धन या संपत्ति के लोभ के लिए करीबी संबंधियों के दुश्मन बन जाने को प्रदर्शित करता है।

सपनों के-से दिन

गुरदयाल सिंह का प्रस्तुत पाठ उनके बचपन के दिनों की बातें और शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक तत्त्वों पर विचार करते हुए कहते हैं-

- मित्रों के साथ खेलते हुए भाषा कभी बाधक नहीं बनी।
- छुट्टियों के गृहकार्य की चिंता सताना, पिटाई का डर सताना, ओमा का आदर्श सामने रखना, गृहकार्य करने की अपेक्षा मास्टरों की पिटाई को सस्ता सौदा समझना।
- हेडमास्टर मदनमोहन शर्मा जी का सद्व्यवहार, छात्रों के प्रति सहानुभूति, लेखक को पुरानी किताबें दिलवाना, पीटी सर को मुअत्तल करना।
- अंग्रेज़ अफसरों द्वारा लोगों को फ़ौज में भर्ती करने के लिए प्रलोभन देना, नौटंकी वालों का नौटंकी करना, बच्चों के मन में धुली वर्दी पहनकर फ़ौजी होने के अरमान जागना।
- गर्मी की छुट्टियों में ननिहाल जाना, दूध, दही, मक्खन खाना, दोपहर तक तालाब में नहाना, रेत के ऊपर लेटना, भैंस की दुम पकड़कर गहरे पानी से निकलना।

- मास्टर प्रीतमचंद का बच्चों को स्काउटिंग का अभ्यास करवाते हुए शाबाशी देना, बच्चों द्वारा इसे कॉपी में मिले 'गुड' की अपेक्षा अधिक मूल्यवान समझना।
- स्कूल की सुखद याद, क्यारियों में उगे फूल और उसकी सुगंध का एहसास।
- पीटी सर का भय, उनका बाघ की तरह झपटना, खाल खींचने के मुहावरे को सार्थक बनाना, फ़ारसी के शब्द रूप याद न होने पर लड़कों को 'मुर्गा बनाना।
- सपनों के-से दिन पाठ का मूल उद्देश्य है-

  -बचपन के दिनों को याद करने के बहाने सामाजिक मूल्यों की समझ विकसित करना।

  -शिक्षा-पद्धति में बाल-मनोविज्ञान को महत्त्व नहीं मिलने का परिणाम पीटी सर जैसे अध्यापकों को बच्चों में खौफ़ के रूप में प्रदर्शित करना।

  -शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत पढ़ाई के साथ-साथ खेलों को भी महत्त्व देने की प्रवृत्ति।

  -निम्नवर्गीय परिवार के अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई के महत्त्व को समझने की कोशिश करना।

टोपी शुक्ला

राही मासूम रज़ा अपने इस पाठ में यही बताना चाहते हैं कि अपने वे होते हैं जिनसे अपनापन मिले। फिर भले ही वह अपना, अपने घर का, अपनी जाति का, अपने धर्म का हो या न हो।

- टोपी शुक्ला का पूरा नाम बलभद्र नारायण शुक्ला और पिता का नाम भृगु नारायण शुक्ला जो नीले तेल वाले डॉक्टर के नाम से प्रसिद्ध थे।
- इफ़्फ़न का असली नाम सय्यद जरगाम मुरतुज़ा और पिता का नाम सय्यद मुरतुजा हुसैन था जो कलेक्टर थे।
- टोपी शुक्ला पाठ का मूल उद्देश्य है-

-टोपी शुक्ला तथा इफ़्फ़न की दोस्ती के माध्यम से समाज में सांप्रदायिक सौहार्द बढ़ाने पर ज़ोर देना।

-बचपन की भोली और निष्कलुष भावना को समझने एवं उसे बढ़ावा देने की ज़रूरत पर ज़ोर देना।

-पढ़ाई में कमज़ोर बच्चों के प्रति परिवार एवं विद्यालय के सदस्यों की भावनाओं को अधिक उदार बनने पर ज़ोर देना।

- दस अक्तूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के आत्म-इतिहास में एक विशेष महत्त्व रखता है। इसी दिन टोपी ने कसम खाई थी कि वह किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसका बाप ऐसी नौकरी करता हो, जिसमें बदली होती रहती है। इसका कारण यह था कि इसी दिन उसका पक्का और एकमात्र दोस्त इफ़्फ़न के पिता तबादले पर मुरादाबाद चले गए थे। इससे टोपी अकेला रह गया था।

मुहावरे

(पाठ में आए मुहावरे का अध्ययन ज़रूर करें।)परीक्षा में उत्तर लिखते समय विशेष ध्यान दें, सभी विकल्पों को रिक्त स्थान में भरें और जो उपयुक्त लगे उसका ही चयन करें।

1. प्राण सूखना – अत्यधिक डर लगना
2. पहाड़ होना – कठिन कार्य
3. हँसी खेल न होना – आसान काम न होना
4. आँखें फोड़ना – कठिन काम करना
5. खून जलाना – अत्यधिक परिश्रम करना
6. घोंघे होना – निरा बुद्धू होना
7. अंधे के हाथ बटेर लगना – अचानक कोई कीमती वस्तु प्राप्त होना

8. लगती बातें – दिल दुखाने वाली बातें
9. जिगर के टुकड़े होना – निराश होना
10. जान तोड़ना – परिश्रम करना
11. बूते के बाहर होना – असमर्थ होना
12. प्राण निकलना – डर जाना
13. सिर पर नंगी तलवार लटकना – भय होना
14. सिर फिरना – पागल हो जाना
15. गाढ़ी कमाई – मेहनत से कमाए गए पैसे
16. दाँतों पसीना आना – कठिन कार्य करते समय हिम्मत छूटना
17. लोहे के चने चबाना- कठिन कार्य
18. दिमाग चक्कर खाना – कुछ समझ में न आना
19. पापड़ बेलना – कठिन परिश्रम
20. आटे-दाल का भाव – सच्चाई का पता चलना
21. ज़मीन पर पाँव न रखना – बहुत खुश होना
22. आड़े हाथों लेना – खूब सुनाना
23. तलवार खींचना – नाराज़ होना
24. घाव पर नमक छिड़कना – दुखी करना
25. ठंडा पड़ना – शांत होना
26. होश आना – वस्तुस्थिति का ज्ञान होना
27. बाट जोहना – प्रतीक्षा करना
28. आँखों में तैरना – आँखों के सम्मुख बार-बार आना
29. नज़रें दौड़ाना – बार- बार देखना
30. ख़बर हवा की तरह बहना – बात फैल जाना
31. आग बबूला होना – अत्यंत क्रोधित होना
32. सन्नाटा खिंचना – वातावरण का मौन होना
33. चेहरा मुरझाना – निराश होना
34. चक्कर खाना – समझ में न आना
35. सातवें आसमान पर होना – बहुत खुश होना
36. दो से चार बनाना – खूब रुपया कमाना
37. आँखों से बोलना – भाव द्वारा मन की बात समझना
38. दिल की ज़ुबान समझना – मन की बात जानना
39. दीवार खड़ी करना – बाधा डालना
40. डेरा डालना – अस्थायी रूप से रहना
41. हवा में उड़ना – कल्पना में रहना
42. आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना
43. हाथ न आना – पकड़ में न आना
44. मुट्ठी भर आदमी – थोड़े से आदमी
45. नफरत कूट-कूटकर भरना –बहुत घृणा करना
46. काम तमाम करना – जान से मारना
47. नज़र रखना – निगरानी रखना
48. आपा खोना – स्व को भूलना/नियंत्रण खोना
49. अँधियारा मिटना – अज्ञान समाप्त होना
50. मंत्र न लगना – उपाय काम न आना
51. घर जलाना – स्वयं को न्योछावर करना
52. लाज रखना – सम्मान की रक्षा करना
53. मुँह बंद होना – शांत होना
54. सिर झुकना – हार मानना
55. ज़िंदगी का मौत से गले मिलना – सहर्ष बलिदान देना
56. सिर पर कफ़न बाँधना – बलिदान के लिए तैयार रहना
57. हाथ तोड़ना – शक्ति समाप्त करना
58. हाथ उठाना – आक्रमण होना

संचयन

1. मुँह खोलना – रहस्य बताना
2. कान खड़े होना – सतर्क होना
3. सिर आँखों पर उठाना – मान देना
4. हाथ से निकल जाना – अवसर खोना
5. कुत्ते का जीवन होना – व्यर्थ होना
6. जी-जान से जुट जाना – मन लगाकर काम करना
7. आसमान से ज़मीन पर आ जाना- नुकसान होना
8. दूध की मक्खी होना – अहमियत न होना
9. रंग चढ़ना – प्रभाव पड़ना
10. नाम की तूती बोलना - प्रभुत्व होना
11. दिन गिनना – समय काटना
12. चेहरा खिलना – प्रसन्न होना
13. दिल मसोसकर रह जाना- निराश होना
14. दिल टूटना – दुखी होना
15. मुँह लटकाना- उदास होना
16. मुँह न लगाना – बात न करना
17. पापड़ बेलना- कठिन परिश्रम करना
18. ज़बान की नोक पर रखना - घड़ी-घड़ी बातें सुनाना
19. गीली मिट्टी का लौंदा होना – कोई संवेदना न रहना
20. दिल के आर-पार होना- दिल दुखना